शेख मुजीबुर्रहमान

शेख मुजीबुर्रहमान (मार्च 17, 1920 – अगस्त 15, 1975) का जीवन और विरासत बांग्लादेश की मुक्ति के इतिहास का पर्याय हैं। बांग्लादेश के गोपालगंज जिले के तुंगीपाड़ा में उनका जन्म हुआ और वे 20वीं शताब्दी के राजनीति के सर्वाधिक लोकप्रिय शिखर पुरूषों में शामिल हुए। संस्थागत भेदभाव के विरोध में, बांग्ला जनमानस के सरोकारों को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली उनकी ओजस्वी वाणी ने अंततः उनके अपने लोगों के अधिकारों के लिए संघर्ष को जन्म दिया तथा बांग्लादेश की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। उनके जन्म की एक शताब्दी के बाद, आज भी, लम्बे कुर्ते, पायजामे और काले "मुजीब कोट" की उनकी ट्रेडमार्क पोशाक, उनके अपने देश बांग्लादेश और भारत में वही आदर और श्रद्धा के भाव जगाती है जैसाकि 1971 में हुआ करता था। भारतीयों द्वारा भी उन्हें एक नायक के रूप में सम्मान दिया जाता है।

बंगबंधु का जीवन उनकी विरासत भी है। अपनी दृढ़ धारणाओं और अन्याय के प्रति लड़ाई में अपने संकल्प के कारण उन्हें वर्षों कैद में व्यतीत करने पड़े। धर्मनिरपेक्षता, अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व और समानता उनके संदेश के मूल मंत्र थे। जब सभी प्रजातांत्रिक मूल्यों को दर–किनार करते हुए, पाकिस्तान की दमनकारी हुकूमत ने 'बांग्ला भूमि' पर हुकूमत द्वारा प्रायोजित आतंक और सामूहिक अत्याचार का सिलसिला शुरू किया और लोगों को तबाह किया जाने लगा, तब बंगबंधु ने जनमानस को इसका प्रतिरोध करने के लिए प्रेरित किया जिसने बांग्लादेश को दमन, अत्याचार और जनसंहार से मुक्त कराया।

'मुजीब बोर्षो' (शेख मुजीब के 100वें जन्म दिवस समारोह का अवसर – 17 मार्च, 2020) के प्रारंभ होने के अवसर पर भाषण देते समय प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था कि बंगबंधु पिछली शताब्दी की महानतम शख्सियतों में से एक थे तथा "उनका सम्पूर्ण जीवन सभी के लिए प्रेरणादायक है।"

कोलकाता के इस्लामिया कॉलेज (अब मौलाना आजाद कॉलेज) के छात्र, बंगबंधु ने स्वतंत्र बांग्लादेश के नेता के रूप में भारत और बांग्लादेश के बीच घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों को प्रगाढ़ किया। उन्होंने भारत के लोगों को बांग्लादेशी लोगों का परम मित्र बताया। बंगबंधु द्वारा दिखाए गए रास्ते ने दोनों देशों के बीच साझेदारी, तरक्की और खुशहाली की नींव को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई है।

भारतीय डाक विभाग शेख मुजीबुर्रहमान की जन्म शताब्दी के अवसर पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता अनुभव करता है।

आभार:

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका	: श्री अनुज
विरूपण कैशे	: श्रीमती अलका शर्मा
पाठ	: विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	302400
Stamps Printed	:	302400
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00

Sheikh Mujibur Rahman

Sheikh Mujibur Rahman's (March 17, 1920 – August 15, 1975) life and legacy are synonymous with the history of Bangladesh's Liberation. Born in Tungipara in Gopalganj district of Bangladesh, he became one of the most towering political figures of the 20th century. His forceful articulation of the cause of his people, in opposing institutional discrimination eventually inspired the struggle for the rights of his people and fuelled the liberation of Bangladesh. Even today, a century after his birth, his trademark attire of long kurta, pyjama and the black "Mujib Coat", evokes the same respect and adoration as they did in 1971, in his native Bangladesh and in India, where he is also revered as a hero by the Indian people.

Bangabandhu's life is also his legacy. The courage of his convictions and his resolve to fight injustice cost him years of incarceration. Secularism, pride in one's language and culture and equality were at the core of his message. When the oppressive regime of Pakistan, disregarding all democratic values, unleashed a reign of state-sponsored terror and mass atrocities upon 'Bangla Bhumi' and devastated its people, Bangabandhu inspired the resistance that liberated Bangladesh from repression, domination and genocide.

Delivering his remarks during the commencement of 'Mujib Borsho' (100th Birth anniversary celebrations of Sheikh Mujib – 17 March 2020), Prime Minister Shri Narendra Modi remarked that Bangabandhu was "one of the greatest personalities of the last century"; and that "his entire life is an inspiration for all".

A student of Islamia College (now Maulana Azad College) in Kolkata, as the leader of independent Bangladesh, Bangabandhu went on to promote close and friendly relations between India and Bangladesh. He called the people of India the best friends of the people of Bangladesh. The path shown by Bangabandhu has helped build a strong foundation for partnership, progress and prosperity in both countries.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Sheikh Mujibur Rahman on his birth centenary.

Credits:

Stamp/ FDC/ Brochure : Sh. Anuj

Cancellation Cachet : Smt. Alka Sharma

Text : Ministry of External Affairs, Govt. of India

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
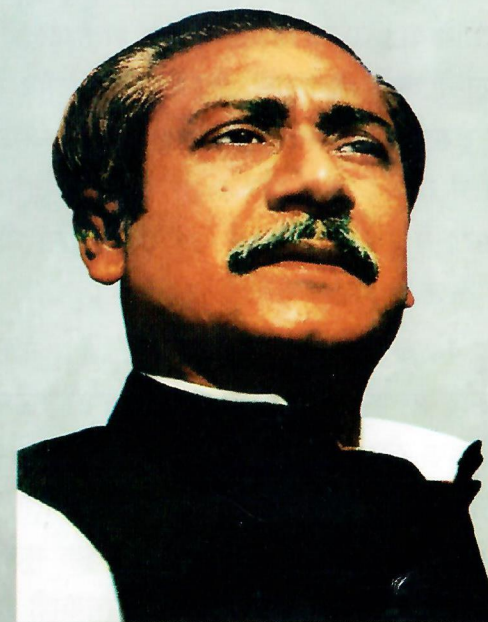
शेख मुजीबुर्रहमान SHEIKH MUJIBUR RAHMAN

विवरणिका BROCHURE